eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

कुमाऊँ के संस्कार गीत

[1]डॉ0 शालिनी त्रिपाठी
[1]एसोसिएट प्रोफेसर संगीत, डी0जी0पी0जी0 कालेज, कानपुर उ0प्र0।

Received: 13 July 2020, Accepted: 27 July 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

अन्य संस्कार आज के समाज में भले ही अपना महत्व खो रहे हैं, किन्तु विवाह के अवसर पर प्राचीनता के साथ –साथ आधुनिकता के प्रदर्शन में एक नया रूप ले लिया है और विवाह संस्कार लगभग सभी स्थानों पर बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। विवाह पुत्र को हो या पुत्री का दोनो ही अवसरों पर संस्कार गीतों की स्वर लहरी वातावरण को माधुर्य से ओत–प्रोत करती है।

शब्द संक्षेप– कुमाऊँ, लोक साहित्य, विवाह संस्कार गीत, संस्कार गीत।

Introduction

समस्त विवाह संस्कार का कोई भी कर्मकाण्ड ऐसा नहीं होता जो मंगल गीतों के बिना सम्बन्न होता हो, ये गीत विभिन्न अनुष्ठानों से सम्बद्ध होते हैं। गढ़वाल क्षेत्र में मांगल का अर्थ विवाह के ही मंगल गीतों से लगाया जाने लगा है। किसी भी शुभ कार्य से पूर्व देवताओं का स्मरण आवाहन और आशीर्वाद प्राप्त करना आवश्यक समझा जाता है। इसलिए विवाह संस्कार से पूर्व कूर्म देवता धरती माता भूमिपाल, क्षेत्रपाल और पंचदेवों ने विवाह जैसे शुभ कार्य की सफलता के लिए मंगलगीत गाकर प्रार्थना की जाती है। मंगलगीत गाने वाली महिलायें तोते को भी आमंत्रित करती हैं कि वह आकर सन्देशवाहक का कार्य करे। तोते से आग्रह किया जाता है कि वह इस शुभ अवसर पर ब्रह्मा सावित्री, विष्णु–लक्ष्मी, शिव–पार्वती, राम–सीता और गणेश की सुधि–बुद्धि देवियों के साथ बुलाकर ले आये यदि वो ऐसा करेगा तो उसकी चोंच को सोने से मढ़ दिया जायेगा।

मंगल गीतों के साथ पुरोहित अनुष्ठान करता रहता है। वह और वधु के रूप में देवताओं की कल्पना की जाती है। गढ़वाल क्षेत्र में वर को शिव और कन्या को पार्वती के रूप में स्वीकारा जाता है –

कैसो देखेलो पार्वती को रूप .....
.....केश त देखेलो, सौंण सी रिमझिम।

अर्थ – वधू वंश में मंगल स्नान के बाद हमारी पार्वती (वधू कन्या) कैसे दिखाई देगी? मंगल्यानियाँ मंगल गीता गाती हुई कहती है कि हमारी पार्वती (कन्या) पर्वत श्रेणी पर उगे पूर्ण चन्द्रमा की तरह दिखेगी। वह तो दीपक की जोत के समान उजेली है न? उसके टखने दूब की डाली की तरह हैं जांघ केले के गोलकों की तरह दिखाई दे रही है। उसकी कमर तो हिरणी के समान लचकदार है। उसके होंठ बुरांस के फूल की तरह रक्त वर्ण के हैं। दंत पंक्ति अनारदानों को भी लजा रही है। कमल की पंखुड़ियों की तरह हमारी पार्वती (कन्या) की आंखे हैं। सावन की काली घटा में जब

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

रिमझिम वर्षा होती है और उस समय जैसा दिखाई देता है वैसा ही हमारी पार्वती (कन्या) के बालों की छटा भी दिखाई दे रही है।

विवाह जैसे प्रसन्नता के अवसर पर हास–परिहास या चुगलबाजी का होना असांभाविक नहीं है। संस्कार गीतों में भी इसका पुट देखा जा सकता है। एक कुमाऊँनी लोकगीत इस प्रकार है –

ओ पंडित लोगो, ओ सज्जन लोगो .....

..... मेरी बेटी को दुःख मत देना।

विवाह में सात फेरों का अपना एक महत्व है। इसके बाद ही विवाह पूर्ण माना जाता है, सात फेरों का गढ़वाली संस्कार गीतों में इस प्रकार वर्णन हुआ है –

पैलो फेरो फेरी लाड़ी, कन्या च कुँवारी .....

..... सात फेरो फेरी लाड़ी, लाड़ी हैं, तुमारी।

इस प्रकार पहली भांवर में कन्या कुमारी, दूसरी भांवर में माँ की दुलारी, तीसरी भाँवर में कन्या भाईयों की दुलारी, चौथी भांवर में कन्या मायके से बिछुड़ने को तैयार हो जाती है, पाँचवी भांवर में वह ससुराल की तैयारी कर छठी में सास की बहू बनकर सातवीं भाँवर में में वह वर का पत्नीत्व स्वीकर कर सबको छोड़कर उसी की हो जती है।'' कन्या की विदाई के समय संस्कार गीतों में हृदय की करूणा इस प्रकार मुखरित हुई हैं।

काला डांडा पीछ बाबाजी, काली च कुयेड़ी .....

..... त्वैं तई बेटी एकुली नी भेंजू।

अर्थ– पिता के गले लगती हुई बेटी कहती है– काले पर्वत' के पीछे काले–काले कुहरे के बादल छाये हुए हैं। पिताजी अकेले (ससुराल) जाते हुए मुझे डर लगता है। पिताजी उस विदेश में जहाँ अपना कोई नहीं है, मैं अकेले कैसे जाऊँगी? पिता बेटी को समझाते हैं कि बेटी तुम्हारे साथ तुम्हारे बड़े और छोटे भाई जायेंगे। बारात में कई लोग अपने जा रहे है। आगे–आगे बाराज जायेगी और पीछे–पीछे मै हाथी–घोड़े भेजूंगा। तुम्हे अकेले नही भेजूंगा। धैर्य रख बेटी। तुझे सामने के चार पहाड़ों से पार जाना है। जा बेटी, मैं तुझे अकेली नही भेजूंगा।

अपनी लाड़ी से विछोप की कल्पना माँ को व्याकुल कर रही है। उधर घर में वधू का प्रवेश मंगल सूचक माना जाता है। इस अवसर पर उसका स्वागत गृह लक्ष्मी के रूप में किया जाता है। गढ़वाल क्षेत्र का ये संस्कार गीत देखने योग्य है –

शुभ दिन शुभ घड़ी आई सुहागण .....

..... मोतियों परोखदी आई सुहागण।

अर्थ– आज के शुभ दिन और शुभ घड़ी में सुहागन का गृह–प्रवेश हो गया है। अमृत को सींचती हुई और मोतियों को बिखेरती हुई यह लक्ष्मी (वधू) आ गई है। इस सुहागन का स्वागत् है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

किसी भी शुभ कार्य के आरम्भ में ईष्ट देवता के शगुन की कामना की जाती है। उस अवसर पर कुमाऊँ क्षेत्र में निम्नलिखित मंगलगीत गाया जाता है –

शगुन दो काज है बहुत अच्छा, शगुन बोलो .....

..... आईवांती हो, पुत्रवली हो।

अर्थ– गाओ, मंगलाचार गाओ यह अति शुभ मंगलमय कार्य है। सुन्दर, रंगीली, ओढ़नियाँ धारण किए, अंचल में कमल का फूल लिए, इस सुन्दर फूल को लाए हैं गणेश, रामचन्द्र तथा लक्ष्मण, आप सब आजीवन सुखी रहें, स्वस्थ हों, दीर्घायु हो। उन ओढ़नियों को धारण किए सिद्धि–बुद्धि देवियाँ, सीतादेवी, बहूरानियाँ आयुष्मान हो, पुत्रवती हो।

उत्तराँचल के संस्कार गीत अपने आप में एक मधुरता लिए हुए हैं। इन गीतो में धार्मिक अनुष्ठानों के समय परमात्मा से मंगल की कामना की जाती है। प्रायः सभी संस्कार इन मंगल गीतों का विषय रहे हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उत्तरांचल का लोक साहित्य अपने में एक समृद्ध संस्कार गीतों की परम्परा को समाये हुए है।

संदर्भ सूची

1. डॉ0 शिवानन्द नौटियाल–गढ़वाल के लोकगीत एवं लोकनृत्य, पृ0सं0 15
2. डॉ0 शिवानन्द नौटियाल–गढ़वाली लोकगीत पृ0सं0 17
3. मोहन उप्रेती– कुमाऊँनी लोकगीत पृ0सं0 39
4. डॉ0 शिवानन्द नौटियाल–गढवाल के लोकगीत एवं लोकनृत्य, पृ0सं0 17–18
5. डॉ0 शिवानन्द नौटियाल–गढ़वाल के लोकगीत एवं लोकनृत्य, पृ0सं0 18
6. डॉ0 शिवनान्द नौटियाल– गढ़वाली लोकगीत, पृ0 सं0 19